## दिनांक 17 जुलाई, 1987

सं. श्रो वि. एफ.डी. 26-87/28713. — र्चूिक हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं में नार्डन इन्जीनियरिंग वर्कस, प्लाट नं 5-वी, सैक्टर 4, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री नित्यानन्द मार्फत हरी सिंह यादव, इन्टक यूनियन श्राफिस नाहर सिंह मार्किट- बल्लवगढ तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्ण्ट करना वांछनीय स मझते है ;

इसलिए, अब, ओद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित ओद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद की नीचे विनिद्धिय मामलें जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीक्षकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में दने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:-

्क्या श्री नित्यानन्द की सेवा समार्प्त की गई है या उसने स्वयं त्याग पत्न देकर नौकरी छोड़ी है ? इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो. वि. एफ.डी./गुड़गांव/139-87/28720.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० वेस्टर्न इण्डिया इण्डस्ट्रीज लिमिटिड, 55, इण्डस्ट्रीयल इस्टेट, पालम, गुड़गांव रोड़, गुड़गांव, के श्रीमक श्री के. कुट्टी शंकरन मार्फत श्री पी. के. थम्पी, जनरल सैंकेट्री बी-II, श्राई डी. पी. एल., टाऊनिशप, गुड़गांव, तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

· ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7-क के श्रधीन गठित श्रीद्योगिक श्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं श्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु विनिर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री के कुट्टी शंकरन की सेवाओं का समापन/छांटी न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत कार हकदार है ?

सं. ग्रो. वि. एफ.डी./गुड़गांव/140-87/28727.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० वैस्टर्न इण्डिया इण्डस्ट्रीज लिमिटिड, 55, इण्डस्ट्रीयल इस्टेट, पालम, गुड़गांव रोड़, गुड़गांव, के श्रमिक श्री शशीधरन, फोरमैन, मार्फत श्री पी. के यम्पी, महासचिव, वी-II, ग्राई. डी. पी. एल टाऊनिशप, गुड़गांव तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रोधोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणां के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7-क के ग्रधीन गठित ग्रौद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं श्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं स्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेसु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री शंशीधरन की सेवा समाप्ति /छाँटी न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो. वि. एफ.डी./गुड़गांव/138-87/28734--- चूंिक हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० वेस्टर्न इण्डिया इण्ड्रस्ट्रीज लिंठ, 55, इण्डस्ट्रीयल इस्टेट, पालम, गुड़गांव रोड़, गुड़गांव, के श्रमिक श्री सुधीर कुमार मार्फत श्री पी. के. थम्पी, जनरल सैक्ट्री बी-II फ्राई.डी.पी. एल.टाऊनशीप, गुड़गांव तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते है ;

इसलिए, अब, ओद्योगिक विवाद ग्रक्षिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7-क के ग्रधीन गठित ग्रोद्योगि ब्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के वीच या तो विवादग्रस्त मामला/ मामले हैं अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेंतु निर्दिष्ट करते है:—

> क्या श्री सुधीर कुमार की सेवाओं का समापन/छांटी न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो. वि. एफ.डी /गुड़गाव/42-86/28741--चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० डी. एफ, ग्रो., वन विभाग रेवाड़ी (हरियाणा), के श्रमिक श्री कर्ण सिंह, पुन्न जगमाल सिंह मार्फत श्री भीम सिंह यादव, म. नं. 192, सैक्टर 15, फरीदावाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें के सम्बन्ध में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है ;

इसलिए, अब, श्रोद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7-क के श्रधीन गठित श्रोद्योगिक श्रधिकरण हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे, विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं श्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:--

क्या श्री कर्ण सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हक-दार है ?

सं ग्रो. वि. एफ.डी./गृड्गांव/136-87/28748.—चं िक हरियाणा के राज्यताल की राय है कि मैं वेस्टर्न इण्डिया इण्डस्ट्रीज लिं , 55, इण्डस्ट्रीयल इस्टेट, पालम, गुड़गांव रोड़, गुड़गांव, के श्रमिक श्री राम नाथ भारद्वाज मार्फत श्री पी के थम्पी, जनरल सैकेट्री बी-II ग्राई डी. पी एल टाऊनशीप, गुड़गांव तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते है ;

इसलिए, ग्रब, ग्रोद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 क-के ग्रिधीन गठित श्रोद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों पथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं ग्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते है:—

क्या श्री रान नाथ की सेवाश्रों का समापन/छदंनी न्यायोजित तथा ठोक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 22 जुलाई, 1987

सं श्रो. वि. रोहतक/144-85/29361.—चंुिक हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० हरियाणा कोपरेटिव शुगर मिल लिमिटिड, रोहतक, के श्रमिक श्री हुकम सिंह मार्फत श्री एस० एम० वत्स, डाकखाना गली, रोहतक तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुय हिरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रीधिसूचना सं. 9641-I-श्रम, 78/32583, दिनांक 6 नवम्बर, 1978 के साथ गठित सरकारी ग्रीधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित है :--

क्या श्री हुकम सिंह की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं गैर हाजिर हो कर नौकरी से लियन खोया है? विन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?